लेओनार्दो द विन्ची

लेओनार्दो द विन्ची

जिस दिन लेओनार्दो द विन्ची पैदा हुआ उस दिन उसके दादाजी ने अपनी डायरी में गर्व से यह लिखा : “शनिवार, अप्रैल 15, 1452 को रात 10.30 बजे मेरे घर एक पोते का जन्म हुआ. वो मेरे बेटे सेर पिएरो को बेटा है.”

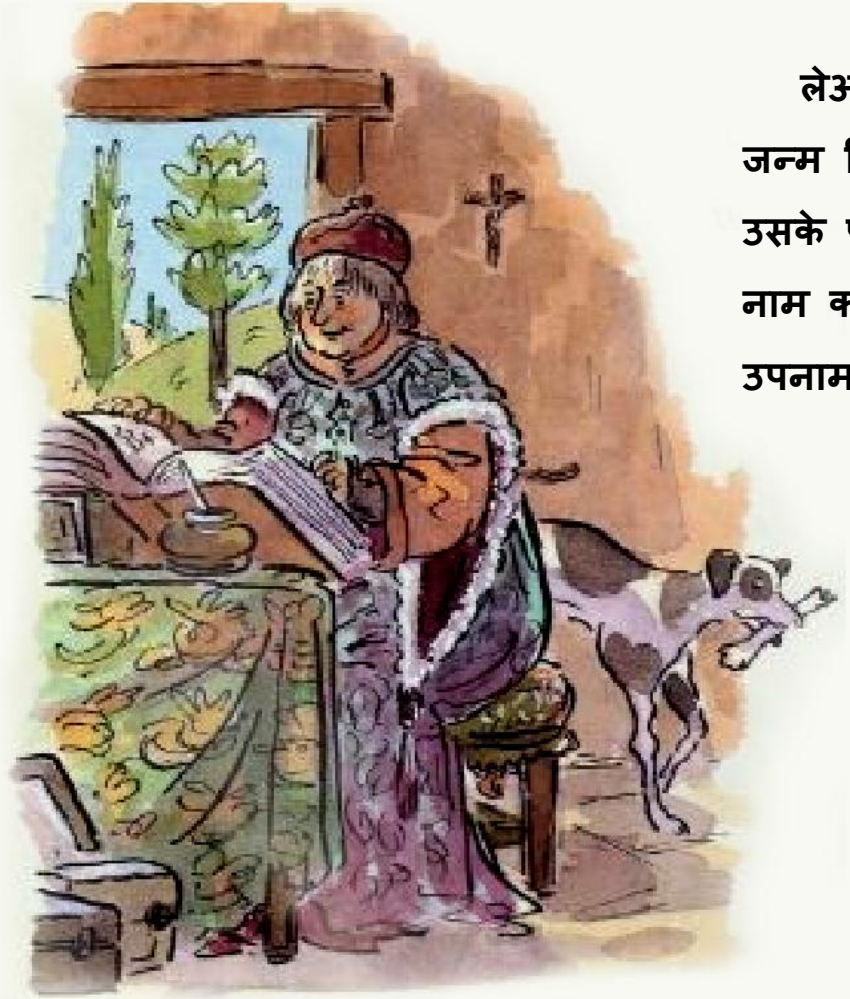

लेओनार्दो द विन्ची का जन्म विन्ची, इटली में हुआ था. उसके परिवार ने अपने शहर के नाम को ही अपने परिवार का उपनाम बनाया.

लेओनार्दो के माता-पिता ने शादी नहीं की थी. शुरू के पहले कुछ महीने उसकी माँ – कैटरीना ने उसकी परवरिश की. पर बाद में लेओनार्दो अपने पिता के माता-पिता यानि दादा-दादी के साथ रहने चला गया.

“एक छोटे बच्चे के होने से हमारा घर दुबारा खुशियों से भर गया है,” दादी मोन्ना लूसिया ने अपनी ख़ुशी ज़ाहिर करते हुए कहा.

लेओनार्दो के पिता सेर पिएरो एक व्यस्त वकील थे. पिता ने दुबारा शादी की. वो अकसर बाहर ही रहते थे. लेओनार्दो की माँ कैटरीना पास में ही रहती थीं, इसलिए लेओनार्दो उनसे अक्सर मिलने जाया करता था. कैटरीना ने भी दुबारा शादी की, और उसके बाद में पांच बच्चे हुए.

लेओनार्दो के चाचा फ्रांसेस्को, परिवार की ज़मीन-जायदाद की देखभाल करते थे. लेओनार्दो उनके साथ हर जगह जाता था. वो जैतून के पेड़ों और अंगूर की बेलों को बड़े ध्यान से देखता था. इससे लेओनार्दो का प्रकृति के प्रति प्रेम बढ़ा.

जब लेओनार्दो सिर्फ चार साल का था तब उसने अपने चाचा के साथ एक प्रचंड समुद्री तूफ़ान को आते हुए देखा. तूफ़ान के रास्ते में जो भी कुछ भी आया वो एकदम तहस-नहस हो गया. तूफ़ान उनके शहर विन्ची के पास से होकर गुज़रा. इसलिए वे तूफ़ान को अच्छी तरह देख पाए. लेओनार्दो इस अनुभव को कभी नहीं भूला. तबसे वो प्रकृति के जादू और उसकी शक्ति पर मुग्ध हो गया.

लेओनार्दो अनेकों अदभुत प्रतिभाओं के साथ पैदा हुआ था. वो देखने में बहुत सुन्दर था और अपने व्यवहार से किसी को भी अपना मित्र बना लेता था. वो बहुत होशियार भी था. वो अपने दिमाग में हमेशा कोई-न-कोई समस्या हल करता रहता था. वो खुद तय करता था कि उसे क्या सीखना है – पर तभी कोई अन्य समस्या उसका ध्यान आकर्षित कर लेती थी!

लेओनार्दो हमेशा अपनी कॉपी में कुछ-न-कुछ नोट करता रहता था. उसके लिखने का तरीका भी बहुत अजीबो-गरीब था. वो हमेशा बाएँ हाथ से उल्टा लिखता था. उसकी लिखाई को पढ़ने का सिर्फ एक ही तरीका था – उसे आईने में देखकर पढ़ना!

लेओनार्दो अपने शहर विन्ची में कुछ ज्यादा नहीं पढ़ पाया. पर उसकी अदभुत प्रतिभा से उसके टीचर अच्छी तरह अवगत थे.

"मैं तुम्हें गणित में इसके आगे नहीं पढ़ा सकता लेओनार्दो," एक परेशान टीचर ने उससे कहा. "मुझे जितना भी आता था वो मैंने तुम्हें सिखा दिया."

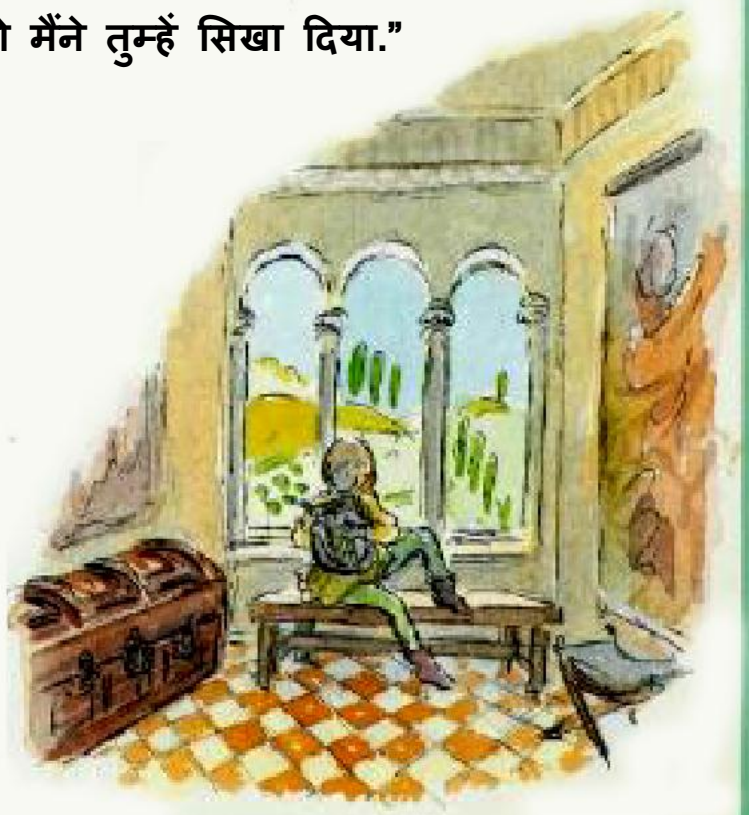

लेओनार्दो संगीत की कक्षा में जाता था. वहां उसने लायर नाम का वाद्ययंत्र सीखा. जल्द ही वो खुद अपने गीत भी लिखने लगा.

"मैंने अपने जीवन में इतने सुन्दर गीत और मधुर आवाज़ कभी नहीं सुनी," लेओनार्दो के संगीत शिक्षक ने कहा.

लेओनार्दो न केवल हर बात को अपनी नोटबुक में लिखता था, वो इटली में गाँव-गाँव घूमता रहता था और वहां की सुन्दरता को अपने सुन्दर चित्रों में उकेरता था.

अंत में सेर पिएरो को यह महसूस हुआ कि लेओनार्दो में चित्रकारी की अनूठी प्रतिभा थी. उन्होंने लेओनार्दो के कुछ चित्र अपने एक करीबी मित्र एंड्रिया देल वेर्रोच्चियो को दिखाए. वेर्रोच्चियो, फ्लोरेंस में आर्ट का एक सफल स्कूल चलाते थे.

"क्या मैं लेओनार्दो को डिजाईन सीखने वाले स्कूल में भर्ती करूं?" सेर पिएरो ने पूछा.

वेर्रोच्चियो, लेओनार्दो के चित्र देखकर दंग रह गया. उसने पिएरो से बेटे को अपने आर्ट स्कूल में दाखिल होने को कहा. यह खबर सुनकर लेओनार्दो बेहद खुश हुआ.

“एक गाँव में रहने के बाद मुझे फ्लोरेंस बहुत बड़ा और अजीब शहर लगेगा,” लेओनार्दो ने कहा, “पर वहां पर मुझे कई नई चीज़ें सीखने का मौका भी मिलेगा.”

फिर 12 साल की उम्र में लेओनार्दो फ्लोरेंस चला गया. वो वहां अपने पिता के साथ सरकारी ऑफिस के सामने रहने लगा. उसके पिता सेर पिएरो, फ्लोरेंस में ही काम करते थे.

वेर्रोच्चियो के आर्ट स्कूल में लेओनार्दो ने झाड़ू लगाने और अन्य छोटे काम करना शुरू किए. पर जल्द ही वो ब्रश और पेंट बनाने लगा और चित्रकारी के लिए फ्रेम पर कैनवस खींचने लगा.

स्कूल में सब छात्र, प्रकृति के चित्र बनाकर ही सीखते थे. लेओनार्दो की ओर जल्द ही उसके टीचर का ध्यान आकर्षित हुआ. लेओनार्दो, मिट्टी के छोटे-छोटे मॉडल बनाता था. इसके लिए वो कपड़ों के टुकड़ों को प्लास्टर में भिगोता था. उससे बाद में मॉडल सख्त हो जाते थे.

"अब मैं उस मॉडल को अच्छा आकार दे सकता हूँ," लेओनार्दो ने समझाया.

"तुम्हारा आईडिया कितना लाजवाब है," वेर्रोच्चियो ने कहा. "हम सभी को चीज़ों को ध्यान से देखकर उनसे सीखना चाहिए."

अगर लेओनार्दो किसी व्यक्ति के चेहरे का चित्र बनाना चाहता था तो फिर उस व्यक्ति के पीछे-पीछे पूरे दिन घूमा करता था, जिससे उस इंसान का चेहरा उसे एकदम अच्छी तरह याद हो जाए. फिर लेओनार्दो जल्दी से घर वापिस आकर ऐसे चित्र बनाता था जैसे वो व्यक्ति वहीँ उसके पास में ही हो.

"किसी भी चित्रकार को एक दर्पण जैसा होना चाहिए," वो कहता था, "उसे अपने सामने की चीज़ को हूबहू प्रतिबिंबित करना चाहिए."

लेओनार्दो को आर्ट-स्कूल में बहुत मज़ा आया. उसे फ्लोरेंस एक प्रेरक शहर भी लगा.

1466 में मध्य-रात्रि के समय फ्लोरेंस में एक भयानक बाढ़ आई. कई घर और चर्च बाढ़ के पानी के डूब गए. घोड़े अपने अस्तबलों में डूब कर मर गए. बाढ़ जल्द ही ख़त्म हो गयी पर उसके द्वारा मचाई तबाही बहुत ही दर्दनाक और भयानक थी. इससे एक बार दुबारा लेओनार्दो को, प्रकृति की भीषण शक्ति का आभास हुआ.

उसी समय फ्लोरेंस में एक भीषण प्लेग फैला. उसके बाद फ्लोरेंस के शासक लोरेंजो द मेडिसी ने लोगों में उत्साह भरने और उनका दिल बहलाने के लिए तमाम पार्टियाँ आयोजित कीं. उन जलसों के लिए वेर्रोच्चियो के स्टूडियो को तमाम बैनर और विशेष पोशाकें डिजाईन करनी पड़ीं.

“लेओनार्दो, क्या तुम मिलान के डियूक के लिए एक हेलमेट डिजाईन कर सकते हो,” वेर्रोच्चियो ने पूछा.

लेओनार्दो एक बेहद सुन्दर हेलमेट डिजाईन किया.

एक दिन सेर पिएरो, विन्ची में अपने पुश्तैनी घर में थे. तभी उनसे खेत में काम करने वाले एक किसान ने एक मदद मांगी.

“मैंने अंजीर के पेड़ का तना काटकर उसकी एक ढाल बनाई है. क्या आप फ्लोरेंस में किसी चित्रकार से उसपर चित्र बनवा सकते हैं?”

उस किसान ने बदले में मछली और शिकार देने का वादा किया. इसलिए सेर पिएरो ने ख़ुशी-ख़ुशी उसकी बात मान ली.

जब लेओनार्दो ने ढाल को देखा तो उसने कहा, “मैं उसे ऐसे पेंट नहीं कर सकता हूँ. पहले मुझे उसे आकार देना होगा और उसे पालिश करना होगा.”

लेओनार्दो ने ढाल को बदलकर उसे एक बेहद सुन्दर कलाकृति बना दी. फिर उसने उस डिजाईन के बारे में सोचा जो वो उसपर पेंट करेगा.

“मुझे पता है! मैं उसपर अपनी कल्पना से एक नया प्राणी पेंट करूंगा,” लेओनार्दो ने कहा. “उसके लिए मैं पांच छिपकलियों, साँपों और चमगादड़ का अध्ययन करूंगा और उन्हें मिलाकर एक भयानक राक्षस बनाऊँगा.”

जब सेर पिएरो ने उस ढाल को देखा तो वो डर के मारे उछल पड़े. उन्हें वो एकदम असली राक्षस लगा!

“बहुत अच्छा! लेओनार्दो ने कहा. “मुझे ढाल की काफी सटीक प्रतिक्रिया मिली. अब आप उसे ले जा सकते हैं.”

वेर्रोच्चियो ने एक सैन-साल्वी के धार्मिक मठ में एक विशाल पेंटिंग बनाने के लिए लेओनार्दो की मदद मांगी.

यीशु के कपड़े उठाए एक परी को पेंट करने का वहां लेओनार्दो को मौका मिला. उस समय लेओनार्दो की उम्र बहुत कम थी. पर उसी पेंटिंग लाजवाब थी.

"तुम्हारी पेंटिंग वाकई में आलीशान है. वो मेरी पेंटिंग से भी बेहतर है. अब आगे से मैं कभी भी रंगों का इस्तेमाल नहीं करूंगा," वेर्रोच्चियो ने कसम खाते हुए कहा.

सेर पिएरो और लेओनार्दो की ख़ुशी और आश्चर्य का तब ठिकाना नहीं रहा जब वेर्रोच्चियो ने लेओनार्दो को आर्ट स्कूल में अपना पार्टनर बना लिया.

लेओनार्दो को जानवरों से बेहद प्रेम था. 20 साल की उम्र में वो शाकाहारी बन गया. वो पिंजरों में बंद चिड़ियों को इसलिए खरीदता था, जिससे कि वो उन चिड़ियों को कैद से रिहा कर सके. वो उड़ती हुई चिड़ियों का अध्ययन करके उनके चित्र भी बनाता था.

"काश मैं भी उड़ पाता," उसने सोचा. फिर उसने एक ऐसी उड़ने वाली मशीन डिजाईन की जो अपने पंख फड़फड़ाती थी. उसने एक हेलीकाप्टर का भी डिजाईन किया.

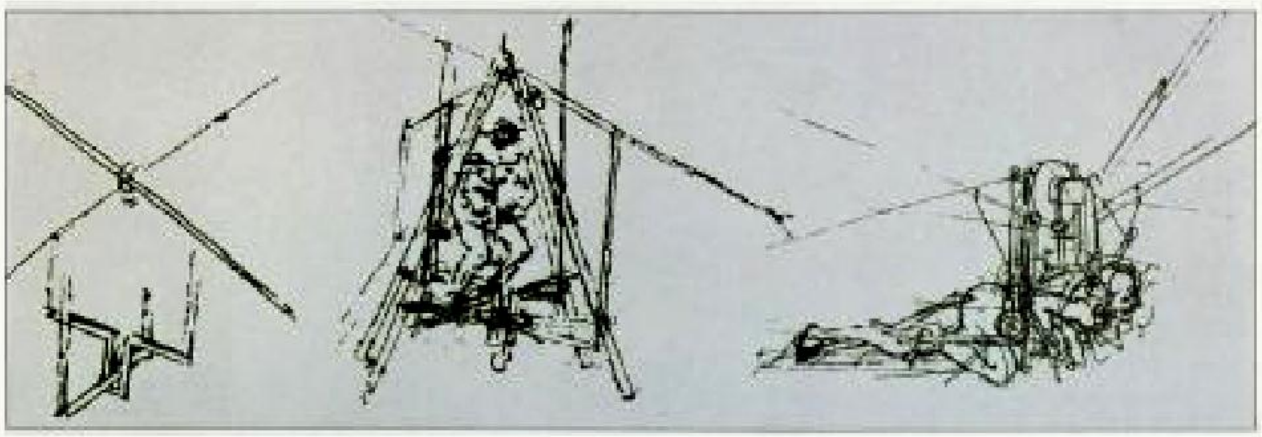

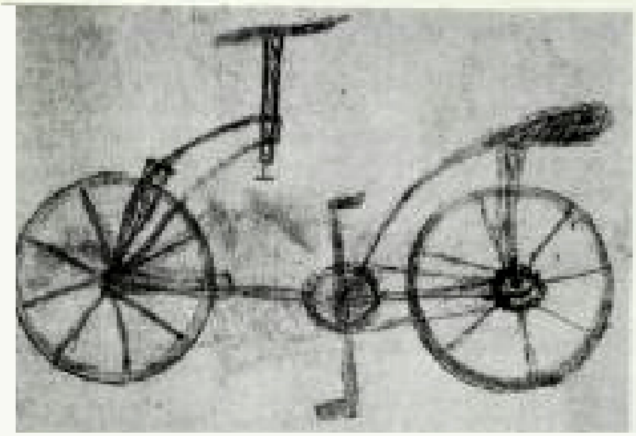

साइकिल के असली निर्माण के 300 साल पहले ही लेओनार्दो ने साइकिल डिजाईन की थी!

उसने मिलान के डियूक को एक पत्र लिखा, “सम्मानीय महोदय, मैंने ऐसे 36 रहस्यमय अविष्कार किए हैं जो मिलिट्री इंजीनियरिंग में आपकी सहायता कर सकते हैं....”

उनमें से एक सेना का टैंक भी था!

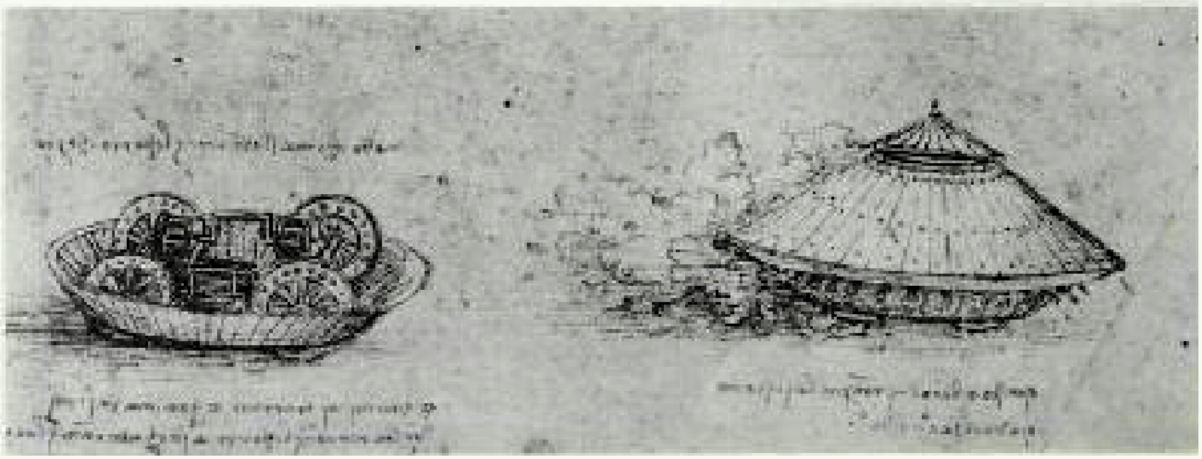

लेओनार्दो में इतने हुनर थे और उसने इतने नए-नए अविष्कार किए थे कि लोगों को यकीन ही नहीं होता है कि कभी पृथ्वी पर वाकई में उस जैसा जिंदा इंसान पैदा हुआ था.

लेओनार्दो की 75 वर्ष की आयु में मृत्यु हुई. उस समय फ्रांस के महाराजा ने उसे अपने गले लगाया था. आज लेओनार्दो की पेंटिंग “मोनालिसा” दुनिया की सबसे कीमती पेंटिंग मानी जाती है.